बंगाल में हिन्द की दहाड़, पूरा राज्य केसरिया

धोती में पीएम नरेंद्र मोदी, बंगाल-असम जीत पर भाजपा का भव्य जश्न

कोलकाता,04 मई. पश्चिम बंगाल के अलग-अलग हिस्सों में हो रही जश्न इस बात का संकेत दे रही हैं कि इस बार का चुनाव बेहद अहम है. सभी प्रमुख राजनीतिक दलों ने चुनाव में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी और मतदाताओं को लुभाने के लिए हर संभव प्रयास किए गए थे.

टीएमसी जहां अपनी उपलब्धियों और विकास कार्यों को गिनाते हुए जनता का समर्थन बनाए रखने की कोशिश कर रही थी, वहीं भाजपा बदलाव की बात करते हुए सरकार की नीतियों और फैसलों पर सवाल उठा रहा था. बंगाल में विधानसभा चुनाव की मतगणना सोमवार सुबह से जारी थी और शुरुआती रुझानों ने राज्य की राजनीति में हलचल पैदा कर दी. विभिन्न जिलों से मिल रहे आंकड़ों के अनुसार कई सीटों पर कड़ी टक्कर देखने को मिली, जबकि कुछ स्थानों पर अप्रत्याशित रुझान सामने आ रहे हैं. राज्य की राजधानी कोलकाता समेत प्रमुख शहरी क्षेत्रों में वोटों की गिनती के शुरुआती दौर में ही राजनीतिक समीकरण बदले. 191 सीटों पर भाजपा को बढ़त मिली, जबकि 97 सीटों पर टीएमसी ने भी अपनी पकड़ बनाए रखी. इससे यह साफ है कि चुनाव परिणाम पूरी तरह से एकतरफा है. काउंटिंग सेंटरों के बाहर कार्यकर्ताओं की भीड़ जुटी थी और हर राउंड के बाद उत्साह और तनाव का माहौल बन रहा. राजनीतिक दलों के नेता लगातार मीडिया के जरिए अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं, जिससे सियासी बयानबाजी भी तेज हो गई है. इस बार के चुनाव में मतदाताओं ने कई मुद्दों को ध्यान में रखते हुए मतदान किया है. विकास, रोजगार, कानून-व्यवस्था और स्थानीय समस्याएं प्रमुख मुद्दों के रूप में सामने आए हैं. इसके अलावा, शहरी और ग्रामीण इलाकों में वोटिंग पैटर्न में अंतर भी देखने को मिला है.

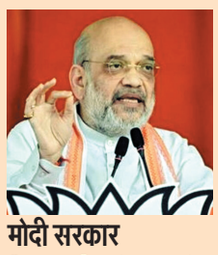

मोदी सरकार विकासशील केरलम के विजन को आगे बढ़ाएगी

नई दिल्ली. गृह मंत्री अमित शाह ने केरल में एनडीए के बढ़ते जनाधार और शानदार चुनावी प्रदर्शन पर राज्य के लोगों का धन्यवाद किया. अपने सोशल मीडिया पोस्ट में शाह ने कहा कि केरल के सभी बहनों और भाइयों ने मोदी सरकार के नेतृत्व वाली एनडीए को अधिक वोट शेयर देकर अपने विश्वास और समर्थन का संदेश दिया है. उन्होंने भाजपा केरलम के अध्यक्ष राजीव और राज्य के सभी कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों को भी सराहा. अमित शाह ने कहा कि मोदी सरकार केवल चुनावी जीत के लिए प्रतिबद्ध नहीं है, बल्कि यह प्रदेश के विकास और नागरिकों की भलाई के लिए लगातार कार्य कर रही है. उन्होंने कहा कि राज्य में विकासशील केरलम का विजन लागू करने और नई योजनाओं के जरिए लोगों के जीवन में सुधार लाने के प्रयास निरंतर जारी रहेंगे.

दिल्ली मुख्यालय में दिखा जीत का उत्साह

नई दिल्ली, 04 मई. तीन अहम राज्यों पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में मिली जीत के बाद भाजपा ने दिल्ली स्थित अपने मुख्यालय में भव्य जश्न मनाया. पार्टी कार्यालय के बाहर हजारों की संख्या में कार्यकर्ता जुटे, जिन्होंने ढोल-नगाड़ों, रंग-गुलाल और पटाखों के साथ जीत का उत्सव मनाया. इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का खास अंदाज सभी के आकर्षण का केंद्र बना रहा. वे बंगाली पारंपरिक धोती पहनकर पार्टी मुख्यालय पहुंचे, जिसने न केवल वहां मौजूद लोगों को उत्साहित किया, बल्कि एक सांस्कृतिक संदेश भी दिया. राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, यह कदम बंगाल की जनता के प्रति सम्मान और जुड़ाव को दर्शाता है. प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि यह जीत 'विकास, विश्वास और सुशासन' की जीत है. उन्होंने कार्यकर्ताओं की मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि भाजपा की यह सफलता जनता के भरोसे का परिणाम है. उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी का लक्ष्य केवल चुनाव जीतना नहीं, बल्कि देश के हर कोने तक विकास पहुंचाना है. असम में लगातार मजबूत प्रदर्शन और पुडुचेरी में बढ़ती पकड़ के साथ भाजपा ने यह साबित कर दिया है कि वह क्षेत्रीय सीमाओं से परे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति मजबूत कर रही है. वहीं पश्चिम बंगाल में मिली जीत को पार्टी के लिए एक बड़ी राजनीतिक उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है. कार्यक्रम के दौरान भाजपा के कई वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे, जिन्होंने इसे ऐतिहासिक क्षण बताया. कार्यकर्ताओं ने मिठाइयां बांटी और एक-दूसरे को बधाई दी. इस जीत ने साफ कर दिया है कि भाजपा आने वाले समय में और अधिक मजबूती के साथ चुनावी मैदान में उतरने वाली है. साथ ही, यह परिणाम विपक्ष के लिए भी एक बड़ा संकेत है कि राजनीतिक मुकाबला अब और अधिक चुनौतीपूर्ण होने वाला है.

ममता को निर्ममता की कीमत चुकानी पड़ेगी

नई दिल्ली. पश्चिम बंगाल में जारी मतगणना के बीच भाजपा के बेहतर प्रदर्शन को लेकर पार्टी के नेताओं में उत्साह साफ नजर आ रहा है. मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तीखा हमला बोला है. मोहन यादव ने कहा कि ममता को निर्ममता की कीमत चुकानी पड़ी है. उनके इस बयान को ममता सरकार की नीतियों और शासन शैली पर सीधा प्रहार माना जा रहा है. उन्होंने यह भी संकेत दिया कि जनता अब बदलाव चाहती है और भाजपा को मिल रहा समर्थन इसी का परिणाम है. वहीं, मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भाजपा के प्रदर्शन को लेकर संतोष जताया है. उन्होंने कहा कि पार्टी ने 'असाधारण प्रदर्शन' किया है और यह कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत का नतीजा है. शिवराज ने यह भी कहा कि बंगाल जैसे चुनौतीपूर्ण राज्य में इस तरह का प्रदर्शन पार्टी के लिए बड़ी उपलब्धि है. बंगाल में भाजपा का प्रदर्शन पिछले चुनावों की तुलना में बेहतर दिखाई दे रहा है, जिससे पार्टी को मनोबल मिला है. हालांकि, ममता बनर्जी की पार्टी अभी भी कई सीटों पर मजबूत स्थिति में बनी हुई है, जिससे मुकाबला दिलचस्प बना हुआ है. इन रुझानों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि बंगाल की राजनीति अब पहले जैसी एकतरफा नहीं रही. जिस तरह के बयान सामने आ रहे हैं, उससे साफ है कि यह चुनाव सिर्फ सीटों की लड़ाई नहीं, बल्कि सियासी वर्चस्व की जंग बन चुका है.

बंगाल में मुस्लिम वोट बैंक में दिखा विभाजन

पश्चिम बंगाल. पश्चिम बंगाल में मतगणना के साथ ही मुस्लिम वोटबैंक के रुझानों को लेकर सियासी चर्चा तेज हो गई है. शुरुआती आंकड़ों और सीटवार रुझानों ने यह संकेत दिया है कि इस बार वोटों का एक बड़ा हिस्सा एकतरफा नहीं रहा, बल्कि विभिन्न राजनीतिक दलों और संगठनों के बीच बंट गया. हुमायूं कबीर की राजनीतिक पहल, असदुद्दीन ओवैसी की एआइएमआइएम और पीरजादा नौशाद सिद्दीकी की आईएसएफ ने राज्य के कई हिस्सों में अपनी उपस्थिति दर्ज की. इन दलों ने खासकर उन इलाकों में वोट हासिल किए जहां मुस्लिम आबादी का प्रभाव अधिक माना जाता है. इस बदलाव के चलते कई सीटों पर पारंपरिक मुकाबला कमजोर हुआ और त्रिकोणीय या बहुकोणीय मुकाबले सामने आए. इससे न केवल चुनावी समीकरण बदले, बल्कि कई सीटों पर परिणाम भी अप्रत्याशित हो गए. इस बार मतदाता पहले की तुलना में अधिक विकल्पों की ओर आकर्षित हुए. इसका कारण स्थानीय मुद्दे, नेतृत्व की छवि और क्षेत्रीय राजनीति में नए प्रयोग बताए जा रहे हैं. काउंटिंग के दौरान यह भी देखा गया कि कुछ सीटों पर वोटों का अंतर बेहद कम रहा, जिससे यह साफ हुआ कि वोट विभाजन ने सीधे तौर पर परिणामों को प्रभावित किया.

ओवैसी, पीरजादा और हुमायूं का असर दिखा

भवानीपुर में ममता बनर्जी 5 हजार वोटों से हारीं

कोलकाता. तृणमूल कांग्रेस प्रमुख और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी राज्य की भवानीपुर विधानसभा सीट से चुनाव हार गयी हैं। उन्हें उनके निकटतम विरोधी उम्मीदवार शुभेंदु अधिकारी ने 15, 105 मतों से पराजित किया। इस सीट पर बीस चक्र तक मतों की गणना हुयी। जब गणना शुरूआती दौर में थी तो श्री अधिकारी ने बढ़त बना ली थी लेकिन जल्दी ही ममता बनर्जी ने 16 हजार से अधिक मतों से बढ़त बना ली। लेकिन इसके बाद उनकी बढ़त गिरती चली गयी। एक बार फिर 17वें चक्र में श्री अधिकारी ने बाजी पलट दी और करीब 550 वोटों से आगे हो गए। इसके बाद के तीनों चक्र में उन्होंने अपनी बढ़त को और मजबूत किया और आखिरकार सुश्री बनर्जी को 15, 105 मतों से हरा दिया।

राहुल ने जनता का जताया आभार

नई दिल्ली. लोकसभा नेता विपक्ष नेता राहुल गांधी ने केरल में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) की जीत के बाद राज्य की जनता का आभार जताया है. श्री गांधी ने सोशल मीडिया पर अपने संदेश में लिखा, केरल के लोगों को धन्यवाद. उन्होंने इस जीत को निर्णायक जनादेश बताया और कहा कि केरल की जनता ने जिस विश्वास के साथ यूडीएफ को चुना है, वह जिम्मेदारी को और बढ़ाता है।उन्होंने चुनाव अभियान में जुटे सभी नेताओं और कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए इसे एक कठिन लेकिन सुव्यवस्थित अभियान बताया।

तमिलनाडु की राजनीति में स्टारडम की वापसी

थलपति विजय की एंट्री से बदले समीकरण

चेन्नई 4 मई. तमिलनाडु की राजनीति में स्टारडम का प्रभाव कोई नया नहीं है. राज्य ने एम.जी. रामचंद्रन, जयललिता और करुणानिधि जैसे नेताओं का दौर देखा है, जहां फिल्मी छवि और राजनीतिक नेतृत्व एक-दूसरे से गहराई से जुड़े रहे हैं. अब इसी परंपरा में एक नया नाम तेजी से उभर रहा है थलपति विजय. विजय, जो दक्षिण भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े सुपरस्टार्स में से एक हैं, उनकी लोकप्रियता सिर्फ पर्दे तक सीमित नहीं रही. उनके फैंस की संख्या राज्य के हर वर्ग और क्षेत्र में फैली हुई है, जिससे वे एक संभावित राजनीतिक ताकत के रूप में देखे जा रहे हैं.

राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि तमिलनाडु की जनता अक्सर करिश्माई और भावनात्मक रूप से जुड़ने वाले नेताओं को प्राथमिकता देती है. यही वजह है कि फिल्मी सितारों ने यहां राजनीति में मजबूत पकड़ बनाई है. [illegible] और जयललिता इसका सबसे बड़ा उदाहरण रहे हैं. विजय की बढ़ती लोकप्रियता ने मौजूदा राजनीतिक दलों के लिए नई रणनीतिक चुनौतियां पैदा कर दी हैं. यदि विजय सक्रिय राजनीति में कदम रखते हैं, तो यह राज्य के चुनावी समीकरणों को पूरी तरह बदल सकता है. हालांकि अभी तक उन्होंने राजनीति में किसी औपचारिक प्रवेश की घोषणा नहीं की है, लेकिन उनके सामाजिक और फैन-आधारित प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता.

तमिलनाडु में त्रिशंकु विधानसभा के आसार

तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में फिल्म अभिनेता से राजनेता बने विजय की पार्टी तमिलागा वेट्री कषगम (टीवीके) सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। पार्टी ने कुल 234 सीटों में से 70 सीटें जीत ली है और 36 सीटों पर उसके उम्मीदवार आगे चल रहे हैं ।तमिलनाडु के चुनाव में अब तक स्पष्ट बहुमत किसी भी पार्टी को मिलता नजर नहीं आ रहा है। मतगणना में अब तक घोषित नतीजों और रूझानों के अनुसार राज्य में त्रिशंकु विधानसभा की संभावना प्रबल दिख रही है। राज्य में टीवीके पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरी है और उसने तमिलनाडु में लम्बे समय से चली आ रही दो दलीय व्यवस्था को इस बार तोड़ दिया है ।चुनाव आयोग के अब तक के आंकड़ों के अनुसार 234 सीटों के रूझान एवं नतीजों में द्रमुक पार्टी ने 37 सीटें जीत ली हैं और 22 सीटों पर उसके उम्मीदवार आगे चल रहे हैं। उसकी सहयोगी कांग्रेस ने दो सीट जीती है और तीन सीटों पर बढ़त बनाये हुये है ।अन्नाद्रमुक 29 सीटें जीतने के साथ 18 सीटों पर बढ़त बनाये हुये है। इसके अलावा पीएमके ने दो सीटें जीती है और तीन पर बढ़त बनाये हुये है ।भाकपा एक सीट पर विजयी और एक सीट पर बढ़त बनाये हुये है। आईयूएमएल ने दो सीटें जीती हैं। भाकपा और वीकेसी ने एक-एक सीट जीती है.

क्या हेमंत विस्व शर्मा बनेंगे असम के सीएम

असम, 04 मई. असम में चुनावी माहौल के बीच मुख्यमंत्री पद को लेकर सियासी हलचल अपने चरम पर पहुंच गई है. इन चर्चाओं के केंद्र में हेमंत विश्वकर्मा का नाम प्रमुखता से लिया जा रहा है. राजनीतिक हलकों में उन्हें एक मजबूत दावेदार माना जा रहा है, हालांकि पार्टी की ओर से अभी तक किसी भी नाम पर अंतिम मुहर नहीं लगाई गई है. राज्य के विभिन्न हिस्सों से मिल रहे चुनावी रुझान यह संकेत दे रहे हैं कि सत्ता का समीकरण बदल सकता है. ऐसे में मुख्यमंत्री पद के लिए संभावित चेहरों को लेकर पार्टी के भीतर मंथन जारी है. सूत्रों के मुताबिक, शीर्ष नेतृत्व सभी पहलुओं पर विचार कर रहा है, जिसमें राजनीतिक अनुभव, जन समर्थन और संगठनात्मक पकड़ जैसे कारक शामिल हैं. काउंटिंग सेंटरों के बाहर कार्यकर्ताओं की भीड़ और बढ़ता उत्साह इस बात का संकेत है कि इस बार का चुनाव बेहद महत्वपूर्ण है.

असम की राजनीति इस समय एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है. यदि नेतृत्व में बदलाव होता है, तो इसका असर न केवल राज्य की नीतियों पर, बल्कि आने वाले चुनावों की रणनीति पर भी प्रभाव डालेगा. हेमंत विश्वकर्मा का नाम चर्चा में जरूर है, लेकिन अंतिम निर्णय आने तक सस्पेंस बरकरार रहने की संभावना है.

बागी उम्मीदवार ने बदली सियासी तस्वीर

तमिलनाडु, 04 मई. तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ा झटका मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन को लगा है, जो अपने ही बागी उम्मीदवार के हाथों चुनाव हार गए. यह हार न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि उनकी पार्टी के लिए भी बड़ा संकेत मानी जा रही है. स्टालिन की हार के साथ ही राज्य की राजनीति में एक नया चेहरा तेजी से उभरकर सामने आया है विजय. फिल्मी दुनिया से राजनीति में कदम रखने वाले विजय की पार्टी ने 108 सीटों पर बढ़त बनाकर सभी को चौंका दिया है. यह बढ़त इस बात का संकेत है कि जनता अब पारंपरिक राजनीतिक दलों से अलग विकल्पों को भी गंभीरता से ले रही है. विजय की लोकप्रियता पहले ही युवाओं और शहरी वोटर्स के बीच मजबूत मानी जाती थी, लेकिन इस चुनाव में ग्रामीण इलाकों में भी उनकी पार्टी को समर्थन मिला है. यही वजह है कि उनकी पार्टी इतनी बड़ी संख्या में सीटों पर आगे चल रही है. दूसरी ओर, केरल में भी सियासी समीकरण बदलते नजर आ रहे हैं. यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट ने बहुमत का आंकड़ा पार कर लिया है, जिससे यह साफ हो गया है कि राज्य में सत्ता

परिवर्तन लगभग तय है. यूडीएफ की इस बढ़त को कांग्रेस और उसके सहयोगियों की मजबूत रणनीति का परिणाम माना जा रहा है. दक्षिण भारत में इस बार के चुनावी नतीजे यह दिखाते हैं कि मतदाता अब बदलाव के मूड में हैं. तमिलनाडु में स्टालिन की हार और विजय की बढ़त, वहीं केरल में यूडीएफ की वापसी ये सभी संकेत हैं कि क्षेत्रीय राजनीति एक नए दौर में प्रवेश कर रही है. आने वाले दिनों में यह देखना दिलचस्प होगा कि विजय अपनी इस बढ़त को सरकार बनाने में कैसे बदलते हैं और क्या स्टालिन की पार्टी इस हार से सबक लेकर अपनी रणनीति में बदलाव करती है.

विधानसभा उपचुनाव

गुजरात, नागालैंड और त्रिपुरा में भाजपा उम्मीदवार जीते

कर्नाटक, नागालैंड, त्रिपुरा, गुजरात और महाराष्ट्र की सात विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों की मतगणना जारी है। अब तक आए परिणामों में गुजरात की उमरेठ, नागालैंड की कोरिडांग और त्रिपुरा की धर्मनगर सीटों पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने जीत दर्ज की है। वहीं, कर्नाटक की बागलकोट सीट पर कांग्रेस उम्मीदवार उमेश मेटी ने विजय हासिल की है ।इसके अलावा, महाराष्ट्र की बारामती सीट से एनसीपी उम्मीदवार और पूर्व उपमुख्यमंत्री अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार आगे चल रही हैं। गुजरात के आणंद जिले की

बारामती से सुनेत्रा पवार आगे

उमरेठ विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के हर्षदभाई गोविंदभाई परमार ने जीत हासिल की है। उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार भृगुराज सिंह चौहान को 30,743 वोटों के अंतर से हराया। भाजपा प्रत्याशी हर्षदभाई गोविंदभाई परमार को 85,500 वोट मिले। यह सीट भाजपा विधायक गोविंद परमार के निधन के बाद खाली हुई थी, जिसके बाद उनके बेटे हर्षद परमार ने इस सीट से चुनाव जीता।

नागालैंड की कोरिडांग सीट से भाजपा उम्मीदवार दाओचिर आई इम्चेन ने जीत दर्ज की है। उन्हें 7,317 वोट मिले, जबकि निर्दलीय उम्मीदवार तोशीकाबा को 4,194 वोट मिले हैं। वहीं, त्रिपुरा की धर्मनगर से भाजपा के जाहर चक्रवर्ती ने जीत हासिल की है। उन्होंने सीपीआई (एम) के अमिताभ दत्ता को 18,290 के वोटों के अंतर से शिकस्त दी। जाहर चक्रवर्ती को 24,291 वोट मिले। इसके अलावा कांग्रेस के चयन भट्टाचार्य तीसरे स्थान पर रहे ।चुनाव आयोग के मुताबिक, कर्नाटक की बागलकोट सीट पर कांग्रेस के उमेश मेटी ने 22,332 वोटों से जीत हासिल की है। उन्हें 98,919 वोट मिले, जबकि दूसरे नंबर पर भाजपा के वीरन्ना चरंतिमठ को 76,075 वोट मिले। वहीं, कर्नाटक के दावणगेरे साउथ में सामर्थ शमनूर मल्लिकार्जुन 4,967 वोटों से आगे चल रहे हैं, जबकि भाजपा के श्रीनिवास